लुप्त वेद

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः शुद्धसत्व बसु

कथा की 300एम थिंकबुक

बहुत पुरानी बात है, ब्रह्मलोक में उन दिनों काफी उत्साह था। ब्रह्मा के बेटे अथर्वन की शादी देवी से हो रही थी।

तीन साल बाद देवी के पाँव भारी हुए। अब वह बाप बनेगा सुनकर अथर्वन बहुत खुश हुआ। "मुझे बेटा देना, जिससे हमारे परिवार का नाम आगे बढ़ाने वाला कोई हो," मुस्कुराते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा।

देवी ने शर्माकर सिर झुका लिया। पर देवी को चिन्ता खा रही थी। "मैं किस तरह से तुम्हें लड़का होने का वादा करूँ?" उसने अथर्वन से पूछा।

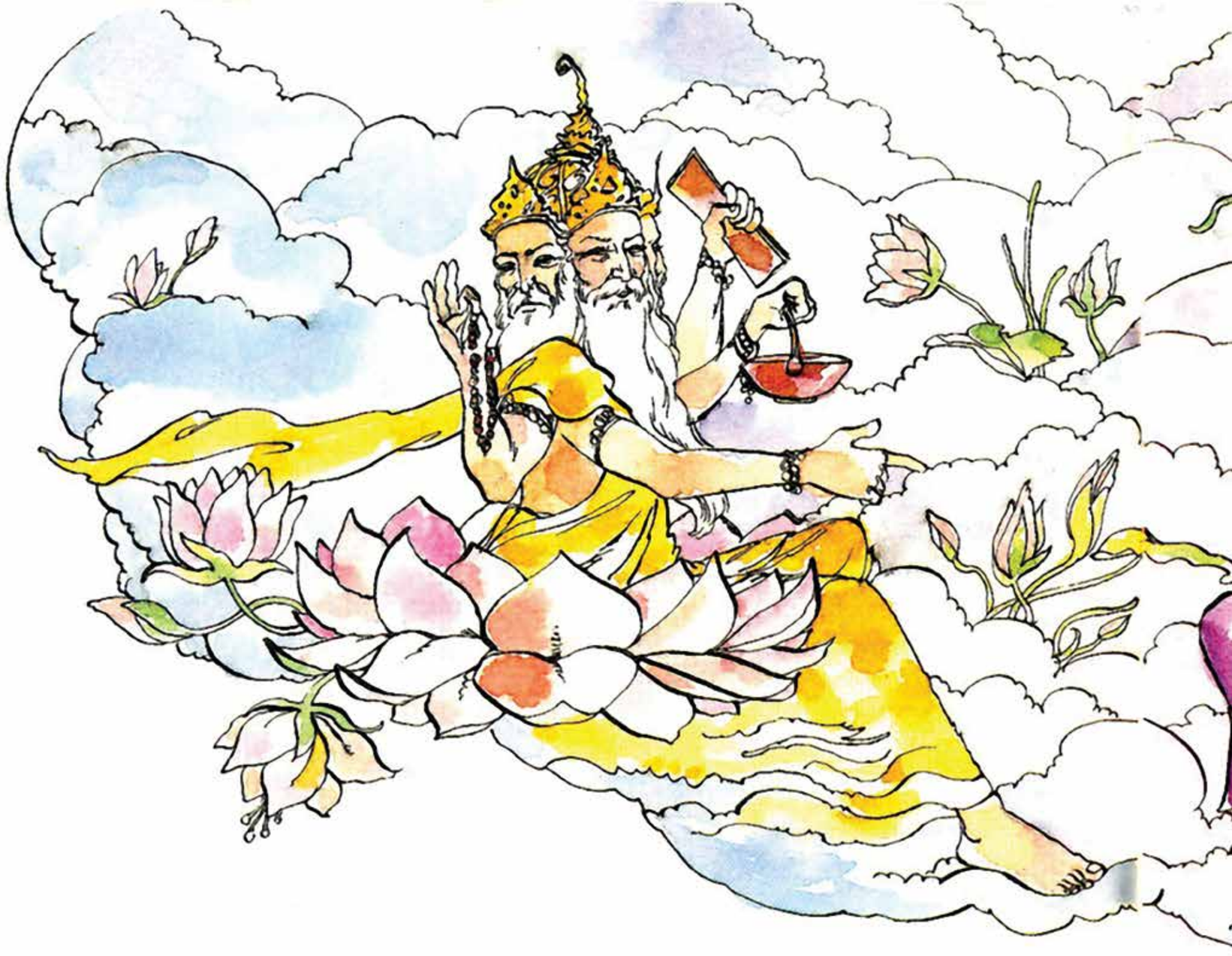

अथर्वन अपने पिता ब्रह्मा के पास गया और बोला, “आपने तो सारी दुनिया बनायी है। देवी को कह दीजिये, वह मुझे बेटा ही दे।”

ब्रह्मा मुस्कुराये। “पुत्र अथर्वन!” उन्होंने कहा, “एक बार गर्भ रह जाए तो मैं भी यह नहीं बतला सकता कि किसी माँ के गर्भ में पलता हुआ बच्चा लड़का है या लड़की। तो देवी क्या करें?”

“उसी के गर्भ में बच्चा है,” अथर्वन ज़िद करता हुआ बोला। “बेटे, तुम्हें वृहद् वेद की जानकारी चाहिए।” ब्रह्मा ने प्यार से कहा, “इधर आओ, मैं तुम्हें ब्रह्मचक्र में ले जाता हूँ।”

धरती पर सभी प्राणी छोटी-छोटी
इकाईयों से बने हैं, जिन्हें जीव-कोश कहते हैं।

अथर्वन और देवी ने ब्रह्मचक्र में सहमते हुए पाँव रखा। इसमें ऐसी-ऐसी चीज़ें दिखती थी जिसे कोई भी इंसान जादुई दृष्टि के बिना न देख पाता। उन्होंने वहाँ इंसान के भीतर की चलती-फिरती तस्वीर देखी।

यह बालू के छोटे-छोटे कण से भी छोटे होते हैं। सेल अलग-अलग प्रकार के होते हैं। त्वचा-कोशों से हमारी चमड़ी बनती है। हड्डी-कोशों से हड्डियाँ; ऐसे ही दिमाग़, खून, नाखून के कोश वगैरह होते हैं।

बिना माइक्रोस्कोप के आप सेल नहीं देख सकते!

यह एक माइक्रोस्कोप है। यह बहुत छोटी चीज़ों को देखने लायक बड़ा बनाती है।

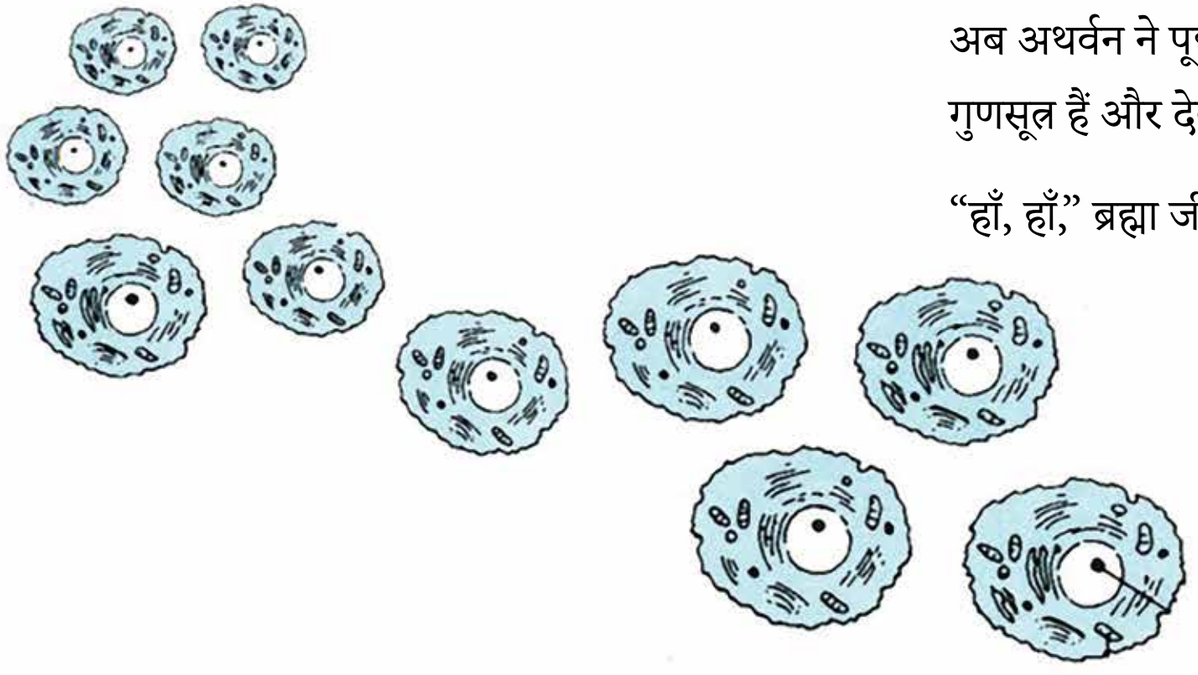

हर इंसानी शरीर में 23 जोड़े पतले धागे जैसे रेशे होते हैं जिन्हें क्रोमोसोम या गुणसूत्र कहते हैं। इन्हीं की वजह से बच्चे की शक्ल माँ-बाप जैसी ही बनती है।

इन 23 जोड़ों में से एक जोड़ा बहुत ख़ास है, जिसे लिंग गुणसूत्र कहते हैं। औरतों में यह जोड़ा दो X क्रोमोसोम का होता है और आदमियों में एक X और दूसरा Y गुणसूत्र होता है।

अब अथर्वन ने पूछा, “इसका मतलब है मेरे शरीर में क X और Y गुणसूत्र हैं और देवी के शरीर में सिर्फ़ X गुणसूत्र हैं।”

“हाँ, हाँ,” ब्रह्मा जी ने सिर हिलाया, “देखते रहो।”

जब X बीज माँ के अण्डकोश से मिलता है तो लड़की होती है।

उन्होंने देखा, कि जब आदमी और औरत का मिलन होता है तो आदमी के बीज कोश औरत के शरीर में डल जाते हैं।

आदमी के इस बीज को शुक्राणु कहते हैं। हर शुक्राणु में सिर्फ एक X या Y गुणसूत्र होता है। यह शुक्राणु सूरज की एक किरण से भी सूक्ष्म होता है। हर महीने औरत के शरीर में एक खास कोश तैयार होता है जिसे अण्डकोश कहते हैं। हर अण्डकोश में सिर्फ़ एक X गुणसूत्र होता है। अगर शुक्राणु का इस अण्डकोश से मिलन हो गया तो नए सेल पनपने लगते हैं। यही बच्चा है।

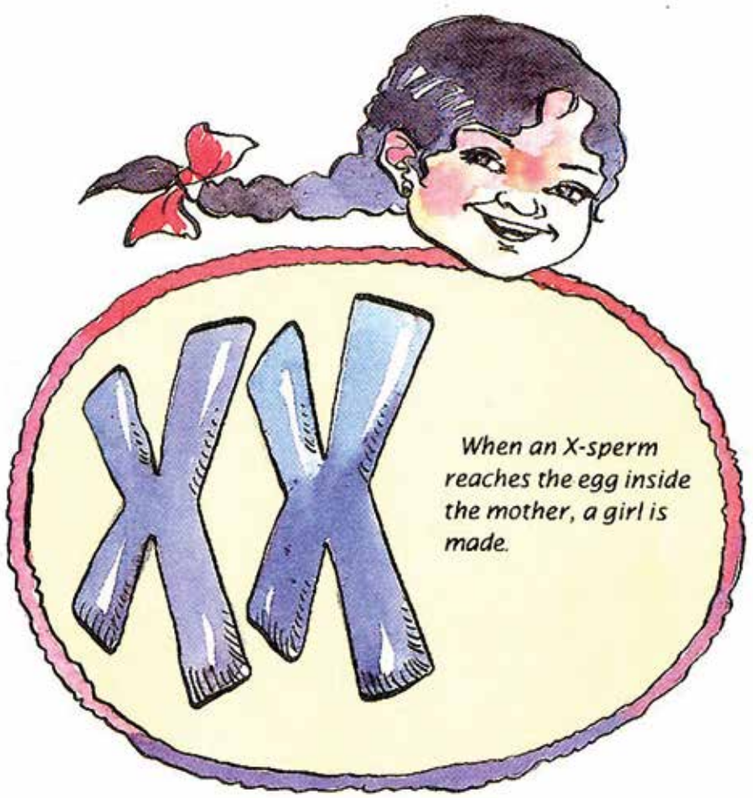

अब बच्चे को एक लिंग गुणसूत्र माँ से, और एक पिता से मिलता है। अगर पिता का X गुणसूत्र मिल जाए तो लड़की और Y मिल जाये तो लड़का होगा।

शुक्राणु अगर Y बीज अण्डकोश से मिल जाये तो लड़का होता है।

अथर्वन ने टोककर कहा, “पर बच्चा लड़का होने के लिए तो एक X और एक Y गुणसूत्र चाहिए। जबकि औरत के पास तो सिर्फ़ दो X गुणसूत्र होते हैं।”

“तुम समझदार शिष्य हो, अथर्वन,” ब्रह्मा बोले। लेकिन अथर्वन देवी की तरफ देख रहा था।

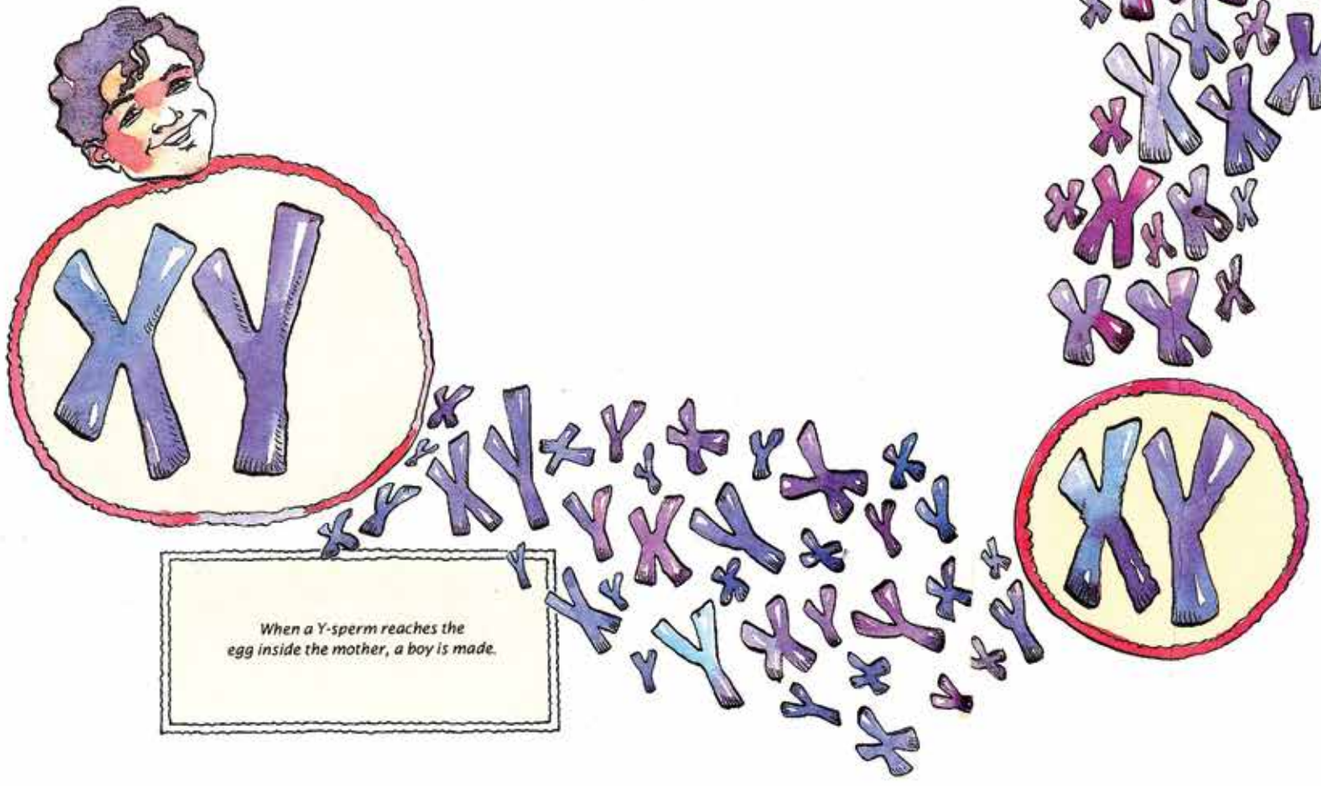

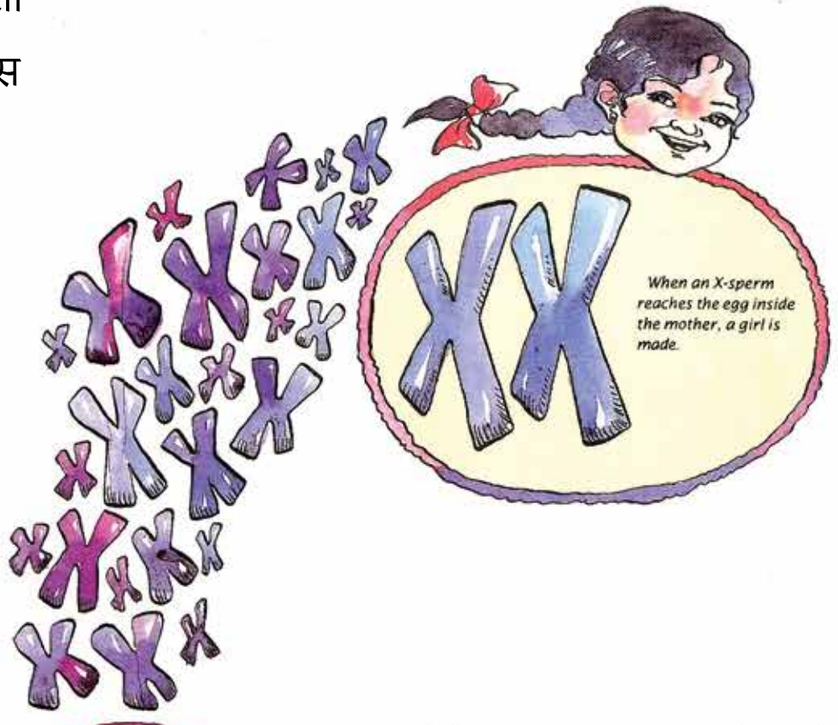

“इसका मतलब मेरे लड़का होगा या लड़की, इसके लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ। बच्चे देने के लिए Y गुणसूत्र सिर्फ़ मेरे पास है,” वह धीरे से बोला।

“अथर्वन, यह बात हर इंसान के लिए सच है। बाप का Y गुणसूत्र ही बच्चे को लड़का बनाता है।

यही वृहद् वेद है। आपके बच्चे यह न भूलें।” ब्रह्मा बोले।

लेकिन अब तक वृहद् वेद खो गया था। अब वैज्ञानिकों ने फिर से ढूंढ निकाला है। जब तुम्हें पता चल, गाँव के सभी लोगों के साथ इस वेद की जानकारी बाँटोगे न?

गीता धर्मराजन को बेहद पसंद है लिखना, विशेष रूप से बच्चों के लिए। इन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

शुद्धसत्व बसु जाने–माने चित्राकार हैं और एनीमेशन फिल्म बनाते हैं। कथा द्वारा प्रकाशित एक स्केयरक्रो का गीत पुस्तक के लिए इन्हें चित्राकथा पुरस्कार 2002 मिला है और ब्रातिसलावा 2003 के चित्राँकन प्रतियोगिता में इनका सम्मानित उल्लेख हुआ।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा 1994, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंमकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी ऑरेंज श्रृंखला में

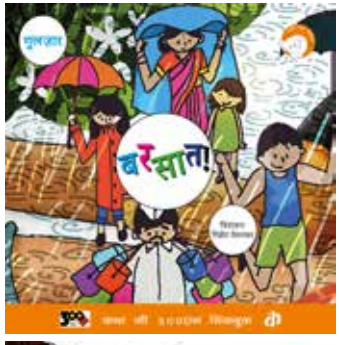

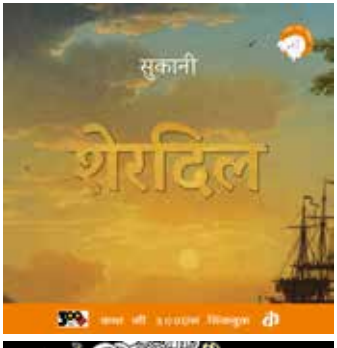

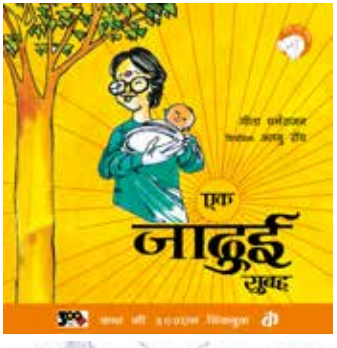

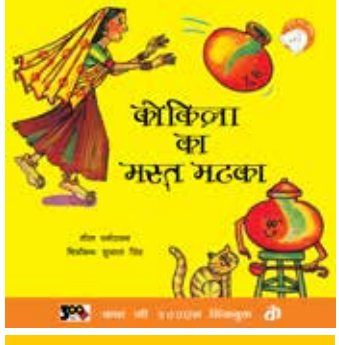

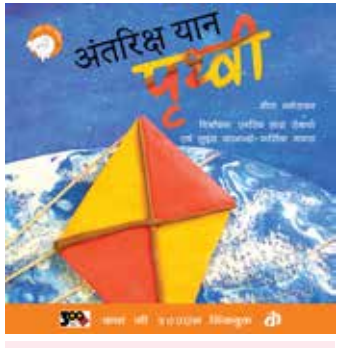

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

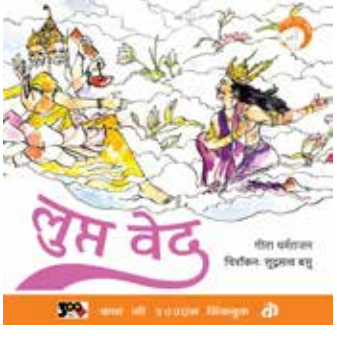

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx